



## ऋग्वेद मण्डल-7

ऋग्वेद मन्त्र 7.15.7

Rigveda 7.15.7

नि त्वा नक्ष्य विशपते द्युमन्तं देव धीमहि ।  
सुवीरमग्न आहुत ॥

(नि) निरन्तर (त्वा) आपके (नक्ष्य) लक्ष्य, शरण देने वाला (विशपते) सब लोगों का संरक्षक (द्युमन्तम्) चमकता हुआ (देव) दिव्य (धीमहि) हम ध्यान करते हैं, केन्द्रित हैं, प्रतिष्ठापित करते हैं (सुवीरम्) वीर, शुभ चाहने वाला, परमात्मा (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (आहुत) बुलाते हैं, आह्वान करते हैं ।

नोट :- यह मन्त्र थोड़े से परिवर्तन के साथ सामवेद 26 में आया है। 'देव धीमहि' के स्थान पर सामवेद 26 में 'धीमहे वयम्' का प्रयोग हुआ है। 'धीमहे वयम्' का अर्थ है हम ध्यान करते हैं, केन्द्रित हैं और प्रतिष्ठापित करते हैं।

व्याख्या :-

हमें निरन्तर भगवान पर ध्यान केन्द्रित क्यों करना चाहिए?

हमारे लक्ष्य, हमारे शरणदाता और सब लोगों के संरक्षक! हम निरन्तर आपके चमकीले प्रकाश पर ध्यान करते हैं, केन्द्रित हैं और आपको प्रतिष्ठित करते हैं। सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य, को हम बुलाते हैं, उसका आह्वान करते हैं क्योंकि वह सबका कल्याण चाहने वाला वीर है।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा सबके लिए 'सुवीरम्' किस प्रकार है?

अधिकांश लोग परमात्मा, सर्वोच्च ऊर्जा, को बुलाते हैं और आह्वान करते हैं क्योंकि केवल वही एकमात्र सबका 'सुवीरम्' अर्थात् कल्याण चाहने वाला वीर है और इस प्रकार वह सबका संरक्षक है। पंजाबी भाषा में भाई को 'वीर' कहकर सम्बोधित किया जाता है क्योंकि वह अन्य भाईयों के लिए कल्याण चाहने वाला बहादुर होता है, इसी प्रकार परमात्मा भी सबका 'वीर' है।

सूक्ति :-

(सुवीरम् अग्ने आहुत, ऋग्वेद मन्त्र 7.15.7, सामवेद 26)

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य, को हम बुलाते हैं, उसका आह्वान करते हैं क्योंकि वह सबका कल्याण चाहने वाला 'वीर' है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 7.15.13

Rigveda 7.15.13

अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः ।  
तपिष्ठैरजरो दह ॥

(अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य  
(रक्षा) रक्षा करो  
(नः) हमारी  
(अंहसः) पाप और पापी  
(प्रति ष्म) उनमें से प्रत्येक  
(देव) दिव्य  
(रीषतः) हिंसक को  
(तपिष्ठैः) अपनी तेजस्वी ऊर्जा से, त्याग से  
(अजरः) वृद्ध न होने वाले, शाश्वत  
(दह) जला दो, नष्ट कर दो ।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 24 में समान रूप से आया है ।

व्याख्या :-

पापों से और पापियों से हमारी रक्षा कौन करता है?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! कृपया दिव्य बनो, प्रत्येक पाप और पापी से हमारी रक्षा करो और अपनी तेजस्वी ऊर्जा और त्याग से हिंसक प्रवृत्तियों को जलाकर नष्ट कर दो, क्योंकि आपकी ऊर्जा कभी वृद्ध न होने वाली, शाश्वत है ।

जीवन में सार्थकता :-

वह, 'अग्नि' पापों और पापियों से हमारी रक्षा कैसे करती है?

जो लोग परमात्मा की दिव्य संगति की इच्छा करते हैं, वह परमात्मा स्वयं को उनके गहरे हृदय स्थान में स्थापित कर देता है। इस प्रकार हमारे जीवन के अन्दर से और बाहर से भी, वह हर प्रकार से हमारी रक्षा करता है। ऐसा जीवन हर क्रियात्मक उद्देश्य के लिए भगवान का निवास बन जाता है, अपने व्यक्तिगत अस्तित्व के अहंकार से दूर और परिणामस्वरूप अस्तित्व के साथ जुड़ी इच्छाओं से भी दूर ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



## R. V. 7.16.1

ऋग्वेद मन्त्र 7.16.1

Rigveda 7.16.1

एना वो अग्निं नमसोर्जो नपातमा हुवे ।  
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं विश्वस्य दूतममृतम् ॥

(एना) यह (वः) आपके लिए (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (नमसा) नमन, विनम्रता के साथ सम्मान (ऊर्जः) बल, शक्ति (नपातम्) न घटने वाला, जिसका पतन न हो (आहुवे) बुलाते हैं, आह्वान करते हैं (प्रियम्) प्रेम करने वाला मित्र (चेतिष्ठम्) ज्ञान और चेतना देना (अरतिम्) हमें पदार्थों से पृथक् रखना (स्वध्वरम्) उत्तम अहिंसक (विश्वस्य) सब (दूतम्) संदेशवाहक (अमृतम्) शाश्वत और न मरने वाले सत्य के लिए।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 45 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

परमात्मा के ऊर्जा रूप अर्थात् अग्नि के क्या लक्षण हैं?

मैं सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य, को अपने नमन और अपनी विनम्रता के साथ सम्मान पूर्वक आपके निम्न लक्षणों के कारण बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ :-

1. (ऊर्जः नपातम्) आपके उस शक्ति और बल के लिए जो न घटने वाला और न ही उसका पतन होता है।
2. (प्रियम्) आप एक प्रेम करने वाले मित्र हो।
3. (चेतिष्ठम्) आप ज्ञान और चेतना देने वाले हो।
4. (विश्वस्य दूतम्) आप सबके लिए संदेशवाहक हो।
5. (अमृतम्) शाश्वत और न मरने वाले सत्य के लिए।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा की विनम्र प्रशंसाएँ करने के क्या लाभ हैं?

परमात्मा के ऊर्जा रूप के उपरोक्त सभी लक्षण मनुष्यों के प्रत्येक श्वास और प्रश्वास के साथ पूर्ण कल्याण को समाहित करते हैं, परमात्मा अपनी ऊर्जा का विस्तार हम तक करते हैं और हमारी पूर्ण विनम्रता के साथ उसे शुद्ध भी करते हैं।

परमात्मा के प्रति हमारी विनम्र प्रशंसाएँ निश्चित रूप से हमारी ऊर्जा के स्तर को बढ़ाती हैं, जो अन्यथा नकारात्मक और व्यर्थ चर्चाओं में ही व्यर्थ होती है। विनम्रता के साथ प्रसन्नता आती है जो संतोष प्रदान करती है, प्रसन्नता परमात्मा के लिए और अन्य सभी जीवों के लिए भी प्रेम पैदा करती है।

यह सभी लक्षण मिलकर हमारी ऊर्जा के स्तर को बढ़ाते हैं। जब हम इस ऊर्जा का सदुपयोग परमात्मा की भक्ति में करते हैं तो यह हमारे जीवन में दिव्यताएँ पैदा करती है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूक्ति :-

1. (ऊर्जः नपातम् – अग्नि, ऋग्वेद 7.16.1, सामवेद 45) अग्नि की शक्ति और बल न घटने वाली है और न ही इसका पतन होता है।
2. (प्रियम् – अग्नि, ऋग्वेद 7.16.1, सामवेद 45) अग्नि एक प्रिय मित्र है।
3. (चेतिष्ठम् – अग्नि, ऋग्वेद 7.16.1, सामवेद 45) अग्नि ज्ञान और चेतना देने वाले है।
4. (विश्वस्य दूतम् – अग्नि, ऋग्वेद 7.16.1, सामवेद 45) अग्नि सबके लिए संदेशवाहक है।
5. (अमृतम् – अग्नि, ऋग्वेद 7.16.1, सामवेद 45) अग्नि हमें शाश्वत और न मरने वाले सत्य की तरफ ले जाती है।

**ऋग्वेद मन्त्र 7.16.5**

**Rigveda 7.16.5**

त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे।

त्वं पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि वेषि च वार्यम्॥

(त्वम्) आप (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (गृहपति) घर के स्वामी और रक्षक, यजमान (गृहस्थी की सभी गतिविधियों का संचालक) (त्वम्) आप (होता) लाने वाला और उपलब्ध कराने वाला (यज्ञ के लिए सभी पदार्थ) (नः) हमारे (अध्वरे) अहिंसक और त्रुटिहीन यज्ञों के लिए (त्वम्) आप (पोता) पवित्र करने वाली शक्ति (विश्ववार) सबके द्वारा पूजा के योग्य (प्रचेता) चेतना का निर्माण करने वाला (यक्षि) सभी यज्ञ कार्य का करने वाला (वेषि) व्याप्त, विद्यमान (च) और (वार्यम्) सभी फल।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 61 में एक शब्द के परिवर्तन के साथ आया है। इस मन्त्र के 'वेषि' के स्थान पर सामवेद 61 में 'यासि' आया है। 'यासि' का अर्थ है देने वाला।

व्याख्या :-

यज्ञ कार्यो में परमात्मा की भिन्न-भिन्न भूमिकाएँ क्या हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आप हो :-

1. (गृहपति) घर के स्वामी और रक्षक, यजमान (गृहस्थी की सभी गतिविधियों का संचालक)।
2. (होता) लाने वाला और उपलब्ध कराने वाला (यज्ञ के लिए सभी पदार्थ)।
3. (अध्वरे) अहिंसक और त्रुटिहीन यज्ञों के लिए।
4. (पोता) पवित्र करने वाली शक्ति।
5. (विश्ववार) सबके द्वारा पूजा के योग्य।
6. (प्रचेता) चेतना का निर्माण करने वाला।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





7. (यक्षि) सभी यज्ञ कार्य का करने वाला।
8. (वेषि वार्यम्) सभी फलों (परिणामों) का देने वाला, सभी फलों (परिणामों) में व्याप्त और विद्यमान।

जीवन में सार्थकता :-

प्रत्येक जीव किस प्रकार ब्रह्माण्डीय यज्ञ का एक भाग है?

कर्मफल सिद्धान्त का नियंत्रक कौन है?

हमारे घर की एक इकाई हो या सारा ब्रह्माण्ड, प्रकृति, मानवता और सभी जीवों की निःसंदेह और चुनौतीरहित शासन शक्ति सर्वोच्च ऊर्जा है। वह प्रत्येक घर का और गृहभूमि का संरक्षक और संवर्द्धक मुखिया है। हम इस बात को स्वीकार करें या सामूहिक इच्छा के अनुसार प्रत्येक जीव इस ब्रह्माण्डीय याज्ञिक प्रकृति का अपृथक हिस्सा है जिसे वह अनदेखा नहीं कर सकता। प्रकृति के इस याज्ञिक चक्र के बिना तो कोई जीवित ही नहीं रह सकता, क्योंकि प्रतिक्षण हमारा श्वास उस ब्रह्माण्डीय यज्ञ का एक अनमोल उपहार है। इसके बाद हर दुःख और सुख तो हमारे अपने कर्मों का फल है। परन्तु परमात्मा हर अवस्था में हमारे संरक्षण और प्रेरणा के लिए व्याप्त होता है और विद्यमान होता है।

नोट :- यह मन्त्र प्रत्येक में, दुःख में, सुख में, पवित्रीकरण में, भक्ति में, प्रेरणा में और कर्मफल सिद्धान्त में व्यक्त करने योग्य है।

**ऋग्वेद मन्त्र 7.16.7**

**Rigveda 7.16.7**

त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः।

यन्तारो ये मघवानो जनानामूर्वान्दयन्त गोनाम्॥

(त्वे) आपके (अग्ने) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य (स्वाहुत) अपनी ही आहुति प्रस्तुत करना, स्वयं पर ध्यान लगाना (प्रियासः) प्रेम करने वाले (सन्तु) हो (सूरयः) दिव्य ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित और दूसरों को प्रकाशित करने वाला, परमात्मा की महिमागान करने वाला (यन्तारः) नियंत्रक और नेतृत्व (मन का) (ये) जो (मघवानः) ज्ञान और गौरवशाली सम्पदा में भरपूर (जनानाम्) लोगों का (ऊर्वान्) समूह (दयन्त) रक्षा करो (गोनाम्) गाय, ज्ञानेन्द्रियाँ।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 38 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

परमात्मा को कौन प्रिय होते हैं?

सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, ऊर्जावान, ज्ञान से प्रकाशित, शुद्ध एवं दिव्य! आपके वे लोग जो स्वयं की आहुति प्रस्तुत करते हैं तथा स्वयं पर ध्यान एकाग्र करते हैं, आपको प्रिय हों; वे लोग जो आपके दिव्य ज्ञान के

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



प्रकाश से प्रकाशित हैं और दूसरों को प्रकाशित करते हैं; परमात्मा का महिमागान और उससे प्रेम करते हैं; जो मन के और अन्य लोगों के नियंत्रक और नेतृत्व करने वाले हैं; जो ज्ञान और गौरवशाली सम्पदा में भरपूर हैं; जो गऊओं की और ज्ञानेन्द्रियों की रक्षा करते हैं, आपको प्रिय हैं।

जीवन में सार्थकता :-

सच्ची और गहरी श्रद्धा भक्ति क्या है?

परमात्मा को प्रेम करना और परमात्मा से प्रेम करने योग्य बनना कोई सामान्य या बाहरी दिखाई देने वाली भक्ति नहीं है। सच्ची भक्ति का प्रथम और मुख्य लक्षण है अहंकाररहित और इच्छारहित जीवन जिसके साथ परमात्मा, दिव्य ज्ञान, गौरवशाली सम्पदा, परमात्मा की महिमागान और परमात्मा से प्रेम, इन्द्र बनकर स्वयं की और अन्य लोगों की रक्षा करना शामिल है। यह सभी लक्षण सच्ची और गहरी भक्ति में सहायक है।

सूक्ति :-

(त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु, ऋग्वेद मन्त्र 7.16.7, सामवेद मन्त्र 38)

अग्ने, आपके वे लोग जो स्वयं की आहुति प्रस्तुत करते हैं तथा स्वयं पर ध्यान एकाग्र करते हैं, आपको प्रिय हों।

**ऋग्वेद मन्त्र 7.16.11**

**Rigveda 7.16.11**

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णा विवष्ट्यासिचम्।

उद्धा सिचध्वमुप वा पृणध्वमादिहो देव ओहते।।

(देवः) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (वः) आपके (द्रविणोदाः) बलों और गौरवशाली सम्पदा का धारण करने वाला और देने वाला, अग्नि, ऊर्जा (पूर्णा) पूर्ण, भरा हुआ (विवष्टु) इच्छा, प्रार्थना (आसिचम्) सिंचाई (प्रेम की, कल्याण की, दया की, त्याग की) (उत् वा सिचध्वम्) और बाहर सींचता है, दूसरों की तरफ, देता है (उप वा पृणध्वम्) और भरता है, लेता है (आत् इत्) उसके बाद शीघ्र (वः) आपके (देवः) वह दिव्य (ऊर्जा) (ओहते) प्राप्त होती है, आहुति को रखती है।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 55 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

हम अपने जीवन को सींचने के लिए किससे प्रार्थना करें?

कौन हमारी आहुतियों को उचित रूप से रखता है?

दिव्य (द्रविणोदाः) बलों और गौरवशाली सम्पदा का धारण करने वाले और देने वाले, अग्नि, ऊर्जा! मैं अपने अन्दर आपके पूर्ण सिंचित होने की प्रार्थना करता हूँ (आपके प्रेम की, आपके कल्याण की, आपके दया की और आपके त्याग की)।

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



इसे पूर्ण करो, प्राप्त करो और प्रदान करो, बाहर सिंचित करो, अन्यो की तरफ। इसके तुरन्त बाद वह दिव्य (ऊर्जा) प्राप्त होती है और आपकी आहुतियों को समुचित प्रकार से रखती है।

जीवन में सार्थकता :-

‘प्राप्त करो और प्रदान करो’ का क्या सिद्धान्त है?

यज्ञ जीवन की पृष्ठभूमि में ‘प्राप्त करो और प्रदान करो’ का सिद्धान्त है। जिस प्रकार हम श्वास लेते हैं अर्थात् पूरक, श्वास छोड़ने के लिए अर्थात् रेचक और अन्तिम श्वास तक अर्थात् मृत्यु तक हम लेने और देने की इस प्रक्रिया को जारी रखते हैं और अन्ततः हमारे जीवन की यात्रा रेचक अर्थात् अन्तिम श्वास छोड़ने के साथ मृत्यु पर समाप्त होती है।

इसी प्रकार ‘द्रविणोदाः’ की तरह अपने प्रत्येक बल और सम्पदा के साथ हमें इसका सदुपयोग दूसरों के कल्याण के लिए ही सुनिश्चित करना चाहिए।

सूक्ति :-

(उत् वा सिंचध्वम् उप वा पृणध्वम्, ऋग्वेद 7.16.11 एवं सामवेद 55)

इसे पूर्ण करो, प्राप्त करो, प्रदान करो, बाहर सिंचित करो, अन्यो की तरफ।

**ऋग्वेद 7.41.1**  
**प्रातःकालीन प्रार्थनाएँ**

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना।

प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम॥1॥

(प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (अग्निम्) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रथम अग्रणी, अग्नि, ताप, ऊर्जावान, बुद्धिमान (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक को (हवामहे) हम बुलाते हैं, आह्वान करते हैं (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (मित्रा) मित्र (वरुणा) शासक (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (अश्विना) जोड़ा (दिव्य शक्तियों का, सूर्य और चन्द्रमा का, अग्नि और जल का, गुरु और शिष्य का, प्राणों का) (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय से पूर्व का समय (भगम्) सुखों, वैभव और महिमा आदि के दाता को (पूषणम्) पोषण करने वाले को (ब्रह्मणः पतिम्) परमात्मा और इस सृष्टि के ज्ञान के सर्वोच्च स्वामी और संरक्षक को (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (सोमम्) शुभ गुणों और दिव्य ज्ञान को (उत) और (रुद्रम्) रुद्र को, न्याय का स्वामी जो सभी बुराईयों को रोकने के लिए मजबूर करके उन पर नियंत्रण करता है (हुवेम्) प्रशंसा, महिमागान।

नोट: यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.1 केवल एक शब्द के अन्तर के साथ ऋग्वेद 7.41.1 तथा यजुर्वेद 34.34 के समान है। ऋग्वेद 7.41.1 तथा यजुर्वेद 34.34 में अन्तिम शब्द ‘हुवेम’ आया है जिसका अर्थ है प्रशंसा करना और महिमागान करना।

व्याख्या:-

प्रातःकाल सूर्योदय के समय किन दिव्य शक्तियों की प्रशंसा और उनका आह्वान किया जाना चाहिए?

**HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM**  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



प्रातःकाल सूर्योदय के समय मैं सर्वोच्च ऊर्जा के स्रोत तथा सर्वोच्च नियंत्रक को बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ। मैं परमात्मा को अपने मित्र की तरह आह्वान करता हूँ; अपने शासक की तरह; जोड़े की तरह (दिव्य शक्तियों का, सूर्य और चन्द्रमा का, अग्नि और जल का, गुरु और शिष्य का, परमात्मा और इस सृष्टि के ज्ञान के सर्वोच्च स्वामी और संरक्षक को); सभी सुखों, वैभव और महिमा देने वाले की तरह; पोषक तत्वों की तरह; इस सृष्टि के सर्वोच्च स्वामी और संरक्षक की तरह; शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान, सम्पदा और औषधियों की तरह; रुद्र की तरह, न्याय का स्वामी जो सभी बुराईयों को रोकने के लिए मजबूर करके उन पर नियंत्रण करता है। मैं परमात्मा के इन सभी आयामों की प्रशंसा और महिमागान करता हूँ।

जीवन में सार्थकता:-

हम दिव्यताओं के साथ कैसे जुड़ सकते हैं?

हमें इस मन्त्र का स्वाध्याय ऋग्वेद के 1.48 और 1.49 सूक्तों के साथ मिलाकर करना चाहिए, जो ऊषाकाल अर्थात् ब्रह्मवेला पर चर्चा करते हैं। इन सभी सूक्तों का संयुक्त अभ्यास निश्चित रूप से हमारी प्रातःवेला अर्थात् दिन के प्रारम्भ को दिव्यताओं से भर देगा।

यह मन्त्र सर्वोच्च ऊर्जा, सर्वोच्च नियंत्रक और सर्वोच्च स्वामी का आह्वान उसकी दिव्यताओं के साथ करता है, जो शक्तियाँ उसने भिन्न-भिन्न दिव्य शक्तियों को प्रदान की है। प्रतिदिन प्रातःकालीन वेला में नियमित रूप से इस सारे चिन्तन और प्रार्थनाओं के साथ हम इन दिव्यताओं के साथ सम्बद्धता महसूस कर सकते हैं।

### ऋग्वेद 7.41.2

प्रातर्जितं भगमुग्रं हुवेम वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता ।  
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह ॥2॥

(प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (जितम्) जीतने के योग्य (भगम्) सभी सुखों, वैभव और महिमा के देने वाले को (उग्रम्) चमक (हुवेम) प्रशंसा, महिमागान (वयम्) हम (पुत्रम्) पुत्रों के समान (अदितेः) अनाशवान और असीम माँ का, सनातन शक्ति (यः) जो (विधर्ता) सभी ब्रह्माण्डीय शरीरों को धारण करने वाला (आध्रः चित्) सबके द्वारा धारण किया गया, सब दिशाओं से (यम्) जिसे (मन्यमानः) जानते हुए, चिन्तन करते हुए (तुरः) शक्तिशाली वाणी (चित्) निश्चित रूप से (राजा) राजा (चित्) भी (यम्) जिसे (भगम्) सुखों, वैभव और महिमा आदि के दाता को (भक्षि) सेवा और प्रशंसा (इति) इस प्रकार (आह) बोलना, उपदेश देना।

नोट: यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.2 केवल एक शब्द के अन्तर के साथ ऋग्वेद 7.41.2 तथा यजुर्वेद 34.35 के समान है। ऋग्वेद 7.41.2 तथा यजुर्वेद 34.35 में 'हवामहे' के स्थान पर 'हुवेम' शब्द का प्रयोग हुआ है। जिसका अर्थ है प्रशंसा करना और महिमागान करना।

व्याख्या:-

क्या हमें सुखों की प्रार्थना करने का अधिकार है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





प्रातःकालीन वेला में अर्थात् सूर्योदय के समय हम चमक वाले सुखों, वैभव और महिमा को देने वाले को बुलाते हैं, आह्वान करते हैं, उसकी प्रशंसा और महिमागान करते हैं कि वह हमें जीतने योग्य सुखों को प्रदान करे क्योंकि हम उस अनाशवान और असीम माता के पुत्र हैं, सनातन शक्ति के पुत्र हैं जिसने सभी आकशीय शरीरों को धारण कर रखा है; जिसे सब लोग सब तरफ से धारण करते हैं; जिसे सब लोग जानते हैं और उस पर चिन्तन करते हैं, और जो निश्चित रूप से सभी लोगों और राजाओं की भी वाणी है। सुखों और वैभव के उस सर्वोच्च दाता की सेवा करो और प्रशंसा करो। अपनी प्रार्थनाएँ इसी प्रकार से बोलो और उपदेश करो।

जीवन में सार्थकता:-

इस सृष्टि का क्या उद्देश्य है?

मानवतावादी जीवन का क्या उद्देश्य है?

परमात्मा ने अनेकों निर्देशों और विचारों के साथ इस सृष्टि का निर्माण निश्चित रूप से सभी जीवों के भोग के लिए किया है। सृष्टि का भोग हमारा अधिकार है, क्योंकि हम सृष्टि निर्माता के पुत्र और पुत्रियों की तरह हैं, किन्तु यह भोगने और संग्रहण करने का कार्य हमारे जीवन का लक्ष्य नहीं होना चाहिए। भोग को न्यूनतम सीमा में रखना चाहिए। जीवन का प्रधान उद्देश्य तो सब सुखों के दाता के साथ एक नियमित सम्बद्धता बनाये रखना होना चाहिए।

उसके अनुदानों को प्राप्त करने के लिए हमें यह सिद्ध करना होगा कि हम उन्हें प्राप्त करने के लिए योग्य और सक्षम हैं। यह योग्यता और सक्षमता एक राता की तरह शक्तिशाली और गतिशील कार्यों को करने से आती है। जैसे सबके कल्याण के लिए यज्ञ करने वाला करता है। इस प्रकार निःसंदेह सृष्टि का उद्देश्य भोग करना है, परन्तु इसकी योग्यता और सक्षमता केवल यज्ञ करने वाले के लिए है। क्योंकि केवल वही व्यक्ति अनुदानों का उत्तम और समान वितरण सुनिश्चित कर सकता है।

ऋग्वेद 7.41.3

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।  
भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥३॥

(भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (प्रणेत) हमें उत्तम मार्ग की प्रेरणा देता है और उपलब्ध कराता है (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (सत्य राधः) सत्य की सम्पदा, सत्य सम्पदा अर्थात् परमात्मा का ज्ञान (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (इमाम्) यह प्रशंसनीय (धियम्) बुद्धि, विवेक (उत् अव) प्रगतिशील (ददत्) देते हुए (नः) हमें (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (प्र) सर्वोत्तम (नः) हमें (जनय) उत्पन्न करता है (गोभिः) गऊओं से, ज्ञानेन्द्रियों से (अश्वैः) अश्वों से, कर्मेन्द्रियों से (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (प्र) सर्वोत्तम (नृभिः) उत्तम मनुष्यों की सहायता से (नृवन्तः) सर्वोत्तम मानव (स्याम) होओ।

नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.3, ऋग्वेद 7.41.3 और यजुर्वेद 34.36 में समान है।

व्याख्या:-

हमें किस प्रकार की सम्पदा की प्रार्थना परमात्मा से करनी चाहिए?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सभी सुखों, वैभव और महिमा के देने वाले! हमें प्रगतिशील और प्रशंसनीय बुद्धि तथा विवेक देते हुए सत्य की सम्पदा या सत्य सम्पदा अर्थात् परमात्मा के ज्ञान वेद को प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम मार्ग की प्रेरणा दो और उपलब्ध कराओ।

सभी सुखों, वैभव और महिमा के देने वाले! हमारे अन्दर सर्वोत्तम गऊओं और अश्वों में से, सर्वोत्तम ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों में से सर्वोत्तम लक्षण पैदा करो। हम सर्वोत्तम मनुष्यों की सहायता से सर्वोत्तम मनुष्य बन सकें।

जीवन में सार्थकता:-

अपने जीवन को एक सच्चा मानव जीवन कैसे बनायें?

यदि आप सत्य की सम्पदा या सत्य सम्पदा को प्राप्त करना चाहते हो तो यह तरंगों के माध्यम से सीधा भगवान से प्राप्त होने वाला भगवान का ज्ञान है अर्थात् वेद। इस सत्य ज्ञान और विवेक को प्राप्त करने का एक ही मार्ग है ध्यान-साधना।

दूसरा हम प्रगतिशील बुद्धि की प्रार्थना करते हैं जिससे सबके कल्याण के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञ किये जा सकें। यह मानव जीवन का दूसरा स्तर है।

तीसरे स्तर पर, समाज से व्यवहार करते हुए हमें अपवाद समान सरल, गाय की तरह विनम्र होना चाहिए। हमारे कार्य त्वरित और अश्वों की तरह सक्रिय और ऊर्जावान होने चाहिए। हमें सत्यवादी होना चाहिए।

केवल इस प्रकार से ही हम अपने जीवन को एक सच्चा मानव बना सकते हैं जो दिव्यताओं, सुख, शांति और प्रगति से लदा हुआ हो।

#### ऋग्वेद 7.41.4

उत्तेदानीं भगवन्तः स्यामोत प्रपित्व उत्त मध्ये अह्नाम्।  
उतोदितौ मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।।4।।

(उत्त) और (इदानीम्) इस समय (प्रातःकालीन वेला) (भगवन्तः) सुखों, वैभव और महिमा के स्वामी (स्याम) बनो (उत्त) और (प्रपित्व) सर्वोत्तम सुखों को प्राप्त करते हुए (उत्त) और (मध्ये) बीच में (अह्नाम्) दिन के (उत्त) और (उदितौ) उदय होने पर (मघवन्) सुखों का सर्वोच्च स्वामी (सूर्यस्य) सूर्य का (वयम्) हम (देवानाम्) दिव्य (शक्तियों और लोगों) का (सुमतौ) सुन्दर मन और बुद्धि (स्याम) बनो।

नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.4, ऋग्वेद 7.41.4 और यजुर्वेद 34.37 में समान है।

व्याख्या:-

जीवन के सुखों को प्राप्त करते हुए हमारे मन की क्या अवस्था होनी चाहिए?

प्रातः वेला के इस समय सुखों, वैभव और महिमा के स्वामी बनो और सूर्योदय के समय तथा दिन के बीच में भी सर्वोत्तम सुखों को प्राप्त करते हुए हम सब दिव्य लोगों के अच्छे मन और बुद्धि में स्थापित हो सकें।

जीवन में सार्थकता:-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



हमें दिव्य (शक्तियों और लोगों) के साथ नियमित संगति और उनका मार्गदर्शन क्यों बनाकर रखना चाहिए?

मानव जीवन के चार लक्ष्य अर्थात् पुरुषार्थ चतुष्टय क्या हैं?

जब कोई व्यक्ति जीवन में हर प्रकार के सुखों और सम्पदाओं को प्राप्त करना प्रारम्भ कर देता है तो इसकी प्रबल सम्भावनाओं होती है वह उन सुखों और सम्पदाओं के संग्रहण की अंधी दौड़ और तीव्र कर दे, अहंकार का विकास कर ले, अन्यो के प्रति अपने दायित्वों को अनदेखा कर दे और मानव जीवन के लक्ष्य अर्थात् परमात्मा की अनुभूति को भी अनदेखा कर दे।

इसलिए ऐसी सभी सम्भावनाओं को दूर रखने के लिए तथा मानव जीवन के लक्ष्य से भटकाव को दूर रखने के लिए यही श्रेयष्कर है कि हम महान् और दिव्य मन वाले लोगों की संगति और उनके मार्गदर्शन में स्थापित रहें, केवल यदा-कदा नहीं बल्कि सारा जीवन और प्रतिक्षण।

दिव्य मन वाले लोगों की संगति हमें पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् मानव जीवन के चार लक्ष्यों का स्मरण कराती रहती है – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष अर्थात् उचित व्यवहार, भौतिक सम्पदा की सार्थकता, इच्छाओं की पूर्ति और मुक्ति के लिए परमात्मा की अनुभूति। बीच के दो लक्ष्य अर्थात् अर्थ और काम, धर्म पर आधारित होने चाहिए और अन्तिम लक्ष्य मोक्ष पर केन्द्रित होने चाहिए।

सूक्ति :- (वयम् देवानाम् सुमतौ स्याम – अथर्ववेद 3.16.4, ऋग्वेद 7.41.4 और यजुर्वेद 34.37) हम सब दिव्य लोगों के अच्छे मन और बुद्धि में स्थापित हो सकें।

### ऋग्वेद 7.41.5

भग एव भगवाँ अस्तु देवस्तेना वयं भगवन्तः स्याम।  
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीति स नो भग पुरएता भवेह।।5।।

(भग) सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (एव) केवल (भगवान्) सर्वोच्च स्वामी (अस्तु) हो (देवः) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (तेन) उससे (वयम्) हम (भगवन्तः) सभी सुखों, वैभव और महिमा से सम्बद्ध (स्याम) हो (तम्) वह (त्वा) आपका (भग) सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (सर्व) सब (इत्) यहाँ (जोहवीति) मैं बुलाता हूँ, प्रशंसा करता हूँ (सः) वह (नः) हमें (भग) सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (पुरः एता) हमारा नेतृत्व करते हुए, हमें प्रगतिशील बनाते हुए (भव) हो (इह) यहाँ, इस जीवन में।

नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.5, ऋग्वेद 7.41.5 और यजुर्वेद 34.38 में एक शब्द के अन्तर के साथ समान है। ऋग्वेद 7.41.5 और यजुर्वेद 34.38 में 'जोहवीति' आया है जबकि अथर्ववेद 3.16.5 में 'जोहवीमि' शब्द है। किन्तु अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं है।

व्याख्या:-

सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला सर्वोच्च स्वामी कौन है?

सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला केवल एक ही सर्वोच्च स्वामी है। हम, उसके दिव्य लोग, सभी सुखों, वैभव और महिमा से सम्बद्ध रहें।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाले! आपके सभी लोग और मैं आपको यहाँ बुलाते हैं और आपकी प्रशंसा करते हैं। वह, सभी सुखों, वैभव और महिमा को देने वाला, हमारा नेतृत्व करे और हमें यहाँ, इस जीवन में प्रगतिशील बनायें।

**जीवन में सार्थकता:—**

हमें दिव्य कौन बना सकता है और इस दिव्यता को बनाये रखने में सहायता कौन कर सकता है? देखने में, प्रत्येक बालक यह महसूस करता है कि उसको सभी सुख देने वाले उसके माता-पिता हैं। इसी प्रकार, नौकरी करने वाले सभी लोग यह महसूस करते हैं कि उनके नियोक्ता उन्हें सम्पदा देने वाले होते हैं। बेशक, क्रियात्मक रूप से यह सत्य है, परन्तु, आध्यात्मिक रूप से, हमें यह अनुभूति प्राप्त करनी चाहिए कि सभी सुखों का वास्तविक सर्वोच्च स्वामी और हमें देने वाला केवल परमात्मा ही है।

उसके सर्वोच्च खजाने में से हमें अपना हिस्सा हमारे पूर्व कर्मों के अनुसार ही मिलता है। इसलिए हमें उस सर्वोच्च स्वामी को बुलाना चाहिए और उसकी प्रशंसा करनी चाहिए जो हमें भविष्य में प्रगति के लिए अच्छे प्रकार से नेतृत्व दे सकता है। भगवान के साथ सम्पर्क हमारी प्रकृति और व्यवहार को दिव्य बना सकता है। इसी प्रकार अपने पारिवारिक और सामाजिक जीवन में हमें अपने माता-पिता तथा नियोक्ताओं के साथ विनम्र सम्बन्ध बनाकर रखने चाहिए, क्योंकि परमात्मा इन वरिष्ठ लोगों के माध्यम से ही सभी सुखों को हमें देता है।

### ऋग्वेद 7.41.6

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय।  
अर्वाचीनं वसुविदं भगं नो रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु॥6॥

(सम — नमन्त से पूर्व लगाकर) (अध्वराय) अहिंसक और शुभ गुण वाले व्यवहार के लिए (उषसः) ऊषाकाल में ब्रह्मवेला में (नमन्त — सम नमन्त) समुचित रूप से हमारे नमन प्रस्तुत हैं (दधिक्रावा इव) पीठ पर बोझ लादे हुए एक अश्व की तरह, एक संकल्पवान व्यक्ति की तरह (शुचये) पवित्रता के साथ (पदाय) लक्ष्य प्राप्त करने के लिए (अर्वाचीनम्) नया (वसुविदम्) सम्पदा प्राप्त करते हुए (भगम्) समस्त सम्पदा का देने वाला (नः) हमें (रथम् इव अश्वा) रथ को खींचते हुए एक अश्व की तरह (वाजिनः) विशेष बुद्धि (आ वहन्तु) लक्ष्य तक ले जाता है।

**नोट:—** यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.6, ऋग्वेद 7.41.6 और यजुर्वेद 34.39 में एक शब्द के अन्तर के साथ समान है। ऋग्वेद 7.41.6 और यजुर्वेद 34.39 में 'नः' आया है जबकि अथर्ववेद 3.16.6 में 'मे' का प्रयोग हुआ है। 'नः' का अर्थ है हमें और 'मे' का अर्थ है मुझे। इस प्रकार अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं आता।

**व्याख्या:—**

ऊषाकाल के लाभों के साथ कौन जुड़ता है?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





सूर्योदय से पूर्व, ऊषाकाल, ब्रह्मवेला में हम अहिंसक व्यवहार प्राप्त करने के लिए तथा पीठ पर बोझ लादे हुए एक अश्व के समान अर्थात् एक संकल्पवान व्यक्ति के समान हम अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ते हुए अपना नमन प्रस्तुत करते हैं।

सभी सुखों को देने वाले की तरह, सभी नई सम्पदाओं को प्राप्त करते हुए, विशेष विद्वान् लोग मेरा मार्गदर्शन लक्ष्य की तरफ करें जैसे एक अश्व रथ को खींचता है।

जीवन में सार्थकता:-

ऊषाकाल में विशेष क्या होता है?

विशेष विद्वान् कौन होते हैं?

सूर्योदय, ऊषाकाल, ब्रह्मवेला उन लोगों के लिए अत्यन्त फलदायक है जो अपने जीवन को अहिंसक और पवित्र बनाकर एक संकल्पशील व्यक्ति की तरह अपने लक्ष्य की तरफ प्रगति करना चाहता है। प्रत्येक प्रातःकाल सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, सक्रियता, ऊर्जा, ज्ञान और स्वाभाविक रूप से पवित्रता के खजाने खोल देता है।

विशेष विद्वानों से अभिप्राय है वे लोग जिन्होंने दिव्य निर्देशों को समझ लिया है और अपना लिया है। ऐसे लोगों की तुलना रथ को खींचने वाले अश्वों से की जाती है, क्योंकि उनका जीवन वास्तव में हमें भी उनका अनुशरण करने की प्रेरणा देता है। वे लोग केवल ज्ञान का बंडल नहीं हैं, बल्कि वे दिव्यता के कार्यवाहक हैं।

### ऋग्वेद 7.41.7

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।  
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥७॥

(अश्वावती) ऊर्जा को धारण करते हुए (गोमतीः) सर्वोत्तम और विनम्र वाणियों को धारण करते हुए (नः) हमारा (उषासः) सूर्योदय से पूर्व ऊषाकाल, ब्रह्मवेला (वीरवतीः) बहादुर पुत्रों को धारण करते हुए (सदम्) घर को (उच्छन्तु) प्रकाशित करो (भद्राः) श्रेष्ठ और कल्याणकारी कार्यों को करते हुए (घृतम् दुहानाः) दूध की वर्षा करते हुए (विश्वतः प्रपीताः) सभी दिशाओं से स्वस्थ रहो (यूयम्) तुम (पात) संरक्षण करो (स्वस्तिभिः) कल्याण के साथ (सदा) सदैव (नः) हमें।

नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.7, ऋग्वेद 7.41.7 और यजुर्वेद 34.40 में समान है।

व्याख्या:-

ऊषा हमारे लिए क्या कर सकती है?

ऊषा, सूर्योदय से पूर्व की किरणें, आप ऊर्जा धारण करते हो, सर्वोत्तम और विनम्र वाणियाँ धारण करते हो और बहादुर पुत्रों को धारण करते हो; आप सभी श्रेष्ठ और कल्याणकारी कार्यों को करते हो। कृपया हमारे घरों को प्रकाशित करो। आप दूध की वर्षा करते हुए अपने कल्याण से सदैव हमारा संरक्षण करते हो ताकि हम सभी दिशाओं से स्वस्थ रह सकें।

जीवन में सार्थकता:-

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



श्रद्धावान् महिलाओं की तुलना ऊषा से क्यों की जाती है?

ऊषाकाल में उठने के अनेक प्रकार के लाभ हैं। कोई भी व्यक्ति इनका अनुभव कर सकता है। सभी ऋषियों, महान् और दिव्य संतों के जीवन यह सिद्ध करते हैं कि प्रातः जल्दी उठने वालों पर दिव्यता बरसती है। घर में समर्पित महिलाओं की तुलना ऊषा से की जाती है, क्योंकि वे प्रातः जल्दी उठकर समूचे परिवार के लिए सौभाग्य के द्वार खोलती हैं, परमात्मा की भक्ति का वातावरण उत्पन्न करते हुए समूचे परिवार को भक्ति मार्ग पर चलने की प्रार्थना और प्रेरणा देती हैं।

**This file is incomplete/under construction**

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on [thevedicpedia@gmail.com](mailto:thevedicpedia@gmail.com) or whatsapp 0091-9968357171